सुख क्या है इक परछाई है,

सुख क्या है इक परछाई है, ये हाथ किसीके ना आई है
मुटठी में रेत भरी जैसे , खोलें तो खाली पाई है
सुख क्या है इक परछाई है.....

क्या हो जाना धनवान है सुख, रिश्ते नाते संतान है सुख
या महल मकान दुकान है सुख, क्या सुख के ये सामान है सुख
फिर इनको पाकर के भी क्यों, ऊपर तक जा कर के भी क्यूँ
लगता है कुछ नही पाया है, असली सुख अभी बकाया है
इक झलक नजर तो आई है, पर हाथ में कुछ न आया है
जबसे ही होश सम्भाला है, इक लम्बी दौड लगाई है
इस सुख को पाने की खातिर, रातों की नींद गँवाई है
सुख क्या है इक परछाई है.....

है आस उसकी जो पास नही, जो पास उसका एहसास नही
जब तक रुकते ये स्वास नही, बुझने वाली ये प्यास नही
तृष्णा ने बहुत दौडाया है, तडपाया है तरसाया है
कुछ पाने की इस हवस में तो, जो पास है वो भी गँवाया है
ऑखों मे नश्तर की भाँति, क्यों चुभता है दूजे का सुख
क्यूँ देखके उसकी खुशहाली, सुख अपना बन जाता है दुख
ये तुलना चलती आई है, चाहे दुश्मन है चाहे भाई है
साँझेदारी है नही इसमें, हर इन्सा एक इकाई है
सुख क्या है इक परछाई है.....

क्या सुख इतना क्षण भंगुर है, जैसे कोई शीशे का घर है
दुःख का इक कंकर सह ना सके, इतना कमजोर है जरजर है
ये पल भर ही क्यों आता है, सुख साथ में दुःख क्यों लाता है
पहले थे दुःखी ये आ जाये, और अब हैं दुःखी ये ना जाये
चाहे जतन अनेकों कर ले कोई, झोंके कब हवा के रुक पाये
जब जब भी लेना चाहा सुख, ये हमसे आँख चुराता रहा
जब जब भी देना चाहा सुख, ये सहज ही पास में आता रहा

ये वो दौलत है जो जितनी बाँटी, उतनी ही पाई है
सुख क्या है इक परछाई है.....

माया से तोलते रहते हैं, सुख महंगा है ना सस्ता है
हम बाहर खोजते रहते हैं, और ये भीतर ही बसता है
ना दौलत से ना ताक्त से, ना जोर जबर से मिलता है
ये वो कमल है जो जल में, सन्तोष सबर के खिलता है
सत्गुरु ने समझाया दिलवर, तो बात समझ यें आई है
आसक्ति दुःख का कारण है, और राम नाम सुखदायी है
गर सुख को चाहें हम सदा, तो शरण राम की ले लेवें
इसके चरणों में हम अपना, तन मन धन अर्पण कर देवें
भक्ति ही सुख की कुजी है, भक्ति का सुख ही स्थाई है,
ये उसके हिस्से आया है, जो रब्ब का बना सौदाई है,
सुख क्षणिक नही सुख स्थाई है, सुख रब्ब की ही परछाई है
सुख क्षणिक नही सुख स्थाई है, सुख रब्ब की ही परछाई है